Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क

रहस्यवाद से सम्बन्ध रखने वाले कबीर के कुछ चुने हुए पद

चलौ सखी जाइये तहां, जहां गये पाइयैं परमानन्द

यहु मन आमन घूमना,
मेरौ तन छीजत नित जाइ
चिंतामणि चित चोरियौ,
तार्थें कछु न सुहाइ

सुनि सखि सुपने की गति ऐसी,
हरि आये हम पास
सोवत ही जगाइया,
जागत भये उदास

चलु सखी बिलम न कीजिये,
जब लग सांस सरीर
मिलि रहिये जगनाथ सूं,
यूं कहैं दास कबीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाल्हा आव हमारे गेह रे
तुम बिन दुखिया देह रे
सब को कहै तुम्हारी नारी
मोकों इहै अदेह रे
एकमेक ह्वै सेज न सोवै,
तब लग कैसा नेह रे
आन न भावै, नींद न आवै,
ग्रिह बन धरै न धीर रे
ज्यूं कामी कों काम पियारा,
ज्यूं प्यासे कूं नीर रे
है कोई ऐसा पर उपगारी,
हरि सूं कहै सुनाइ रे
ऐसे हाल कबीर भये हैं,
बिन देखें जिव जाय रे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वै दिन कब आवैंगे माइ,
जा कारनि हम देह धरी है,
मिलिबौ अंग लगाइ
हौं जानूं जे हिल मिल खेलूं
तन मन प्रान समाइ
या कामना करौ पर पूरन,
समरथ हौ राम राइ
मांहि उदासी माधौ चाहै,
चितवत रैनि बिहाइ
सेज हमारी सिंघ भई है,
जब सोऊं तब खाइ
यहु अरदास दास की सुनिये,
तन की तपति बुझाइ
कहै कबीर मिलै जे सांई,
मिलि करि मंगल गाइ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुलहनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आए हो राजा राम भतार,
तन रत करि मैं मन रत करि हूं,
पंच तत्त बराती,
रामदेव मोरे पाहुने आए,
मैं जोबन में माती।
सरीर सरोवर बेदी करिहूं,
ब्रह्मा वेद उचार,
रामदेव संगि भांवर लेहूं,
धनि धनि भाग हमार।
सुर तैंतीसूं कौतिग आए,
मुनिवर सहस अठासी,
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं,
पुरिष एक अबिनासी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरि मेरा पीव माई हरि मेरा पीव
हरि बिन रहि न सके मेरा जीव
हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया
राम बड़े मैं छुटक लहुरिया
किया स्यंगार मिलन के तांई
काहे न मिलो राजा राम गुसांई
अब की बेर मिलन जो पाऊं
कहै कबीर भौजल नहिं आऊं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किये सिंगार मिलन के तांई
    हरि न मिले जग जीवन गुसांई
हरि मेरो पि रहो हरि की बहुरिया
    राम बड़े मैं तनक लहुरिया
धनि पिय एकै संग बसेरा
    सेज एक पै मिलन दुहेरा
धन्न सुहागिन जो पिय भावैं
    कहि कबीर फिर जनमि न ग्रावै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Hari om

अवधू ऐसा ज्ञान विचारी
ताथें भई पुरिष थें नारी
नां हूं परनी ना हूं क्वांरी
पूत जन्यू द्यौ हारी
काली मूड़ कौ एक न छोड्यो
अजहूं अकन कुवांरी
ब्राह्मन कै ब्रह्हनेटी कहियो
जोगी कै घरि चेली
कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरकनी
अजहूं फिरों अकेली
पीहरि जाऊं न रहूं सासुरै
पुरषहि अंगि न लाऊं।
कहै कबीर सुनहु रे संतो
अंगहि अंग न छुवाऊं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं सासने पीव गौंहनि आई
साँई संग साध नहीं पूगी
गयो जोबन सुपिना की नाँई
पंच जना मिलि मंडप छायो
तीनि जनां मिलि लगन लिखाई
सखी सहेली मंगल गावैं
सुख दुख माथै हलद चढ़ाई
नाना रंगैं भांवरि फेरी
गांठि जोरि बैठे पति ताई
पूरि सुहाग भयो बिन दूल्हा
चौक कै रंगि धरयो सगौ भाई
अपने पुरिष मुख कबहुं न देख्यो
सती होत समझी समझाई
कहै कबीर हूं सर रचि मरि हूं
तिरौं कन्त लै तूर बजाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कब देखूं मेरे राम सनेही
जा बिन दुख पावै मेरी देही
हूं तेरा पंथ निहारूं स्वामी
कब रे मिलहुगे अंतरजामी
जैसे जल बिन मीन तलपै
ऐसे हरि बिन मेरा जियरा कलपै
निस दिन हरि बिन नींद न आवै
दरस पियासी राम क्यों सचुपावै
कहै कबीर अब विलंब न कीजै
अपनों जानि मोहि दरसन दीजै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरि कौ बिलोवनौं बिलोइ मेरी माई
ऐसै बिलोइ जैसे तत न जाई
तन करि मटकी मनहिं बिलोइ,
ता मटकी में पवन समोइ
इला प्यंगुला सुषमन नारी,
वेगि बिलोइ ठाढ़ी छछिहारी
कहै कबीर गुजरी बौरानी,
मटकी फूटी जोति समानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भलैं नींदौ भलैं नींदौ भलैं नींदौ लोग
तन मन रांम पियारे जोग
मैं बौरी मेरे राम भतार
ता कारनि रचि करों सिंगार
जैसे धुबिया रज मल धोवै
हर तप रत सब निंदक खोवै
निन्दक मेरे माई बाप
जन्म जन्म के काटे पाप
निन्दक मेरे प्रान अधार
बिन बेगारि चलावै भार
कहै कबीर निन्दक बलिहारी
आप रहै जन पार उतारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो चरखा जरि जाय बढ़ैया ना मरै
मैं कातों सूत हजार चरखुला जिन जरै
बाबा मोर ब्याह कराव, अच्छा बरहिं तकाय
जौ लौं अच्छा बर न मिलै तौ लौ तुमहिं बिहाय
प्रथमें नगर पहूँचते परि गौ सोग संताप
एक अचंभा हम देखा जो बिटिया ब्याहल बाप
समधी के घर समधी आए आए बहू के भाय
गोड़े चूल्हा दै दै चरखा दियो दिढ़ाय
देवलोक मर जायंगे एक न मरै बढ़ाय
यह मन रंजन कारणै चरखा दियो दिढ़ाय
कहहि कबीर सुनौ हो संतो चरखा लखै जो कोय
जो यह चरखा लखि परै ताको आवागमन न होय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परौसनि मांगे कंत हमारा
पीव क्यूं बौरी मिलहि उधारा
मासा मांगे रती न देऊं
घटै मेरा प्रेम तो कासनि लेऊं
राखि परोसनि लरिका मेरा
जे कछु पाऊं सु आधा तोरा
बन बन ढूंढ़ौं नैन भरि जोऊँ
पीव न मिलै तो बिलखि करि रोऊँ
कहै कबीर यहु सहज हमारा
बिरली सुहागिन कन्त पियारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरि ठग जग की ठगोरी लाई
हरि के वियोग कैसे जीऊं मेरी माई,
कौन पुरिष को काकी नारी,
अभि अंतर तुम्ह लेहु बिचारी
कौन पूत को काको बाप
कौन मरै कौन करै संताप,
कहै कबीर ठग सों मन माना
गई ठगौरी ठग पहिचाना,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को बीनै प्रेम लागौ री, माई को बीनै
राम रसायन माते री, माई को बीनै
पाई पाई तू पुतिहाई
पाई की तुरिया बेचि खाई री, माई को बीनै
ऐसे पाई पर विथुराई,
त्यूं रस आनि बनायो री, माई को बीनै
नाचै ताना नाचै बाना
नाचै कूंच पुराना री, माई को बीनै
कर गहि बैठि कबीरा नाचै
चूहै काट्या ताना री, माई को बीनै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये
भाग बड़े घर बैठे आये,
मंगलचार मांहि मन राखौं
राम रसायन रसना चाखौं
मन्दिर मांहि भया उजियारा
लै सूती अपना पीव पियारा
मैं रनि रासी जै निधि पाई
हमहिं कहा यहु तुमहिं बड़ाई
कहै कबीर मैं कछू न कीन्हा
सखी सुहाग राम मोहिं दीन्हा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब मोहिं ले चल नणद के बीर,
अपने देसा
इन पंचन मिलि लूटी हूँ
कुसंग आहि बिदेसा
गंग तीर मोरि खेती बारी
जमुन तीर खरिहाना
सातों बिरही मेरे नीपजै
पंचूं मोर किसाना
कहै कबीर यहु अकथ कथा है
कहता कही न जाई
सहज माइ जिहि ऊपजै
ते रमि रहै समाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे राम ऐसा खीर बिलोइयै
गुरु मति मनुवा अस्थिर राखहु
इन विधि अमृत पिओइयै
गुरु कै बाणि बजर कल छेदी
प्रगट्या पद परगासा
शक्ति अधेर जेवड़ी भ्रम चूका
निहचल सिव घर वासा
तिन बिनु बाणै धनुष चढ़ाइयै
इहु जग बेध्या भाई
दह दिसि बूड़ी पवन झुलावै
डोरि रही लिव लाई
उनमन मनुवा सुन्नि समाना,
दुविधा दुर्मति भागी
कहु कबीर अनुभौ इकु देख्या
राम नाम लिव लागी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उलटि जात कुल दोऊ बिसारी
सुन्न सहज महि बुनत हमारी
हमरा झगरा रहा न कोऊ
पंडित मुल्ला छाड़ै दोऊ
बुनि बुनि आप आप पहिरावौं
जहं नहीं आप तहां ह्वै गावौं
पंडित मुल्ला जो लिखि दीया
छांड़ि चले हम कछू न लीया
रिदै खलासु निरखि ले मीरा
आपु खोजि खोजि मिलै कबीरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जन्म मरन का भ्रम गया गोविंद लव लागी
जीवन सुन्न समानिया
गुरु साखी जागी
कासी ते धुनि ऊपजै
धुनि कासी जाई
कासी फूटी पंडिता
धुनि कहां समाई
त्रिकुटी संधि मैं पेखिया
घटहू घट जागी
ऐसी बुद्धि समाचरी
घट मांहि तियागी
आप आपते जानिया
तेज तेज समाना
कहु कबीर अब जानिया
गोविंद मन माना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गगन रसाल चुए मेरी भाठी
संचि महारस तन भया काठी
वाकौ कहिए सहज मतिवारा
जीवत राम रस ज्ञान विचारा
सहज कलालनि जौ मिलि आई
आनंदि माते अनदिन जाई
चीन्हत चीत निरंजन लाया
कहु कबीर तौ अनुभव पाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब न बसूं इहि गांइ गुसांई
तेरे नेवगी खरे सयाने हो राम
नगर एक यहां जीव धरम हता
बसैं जु पंच किसाना
नैनूं निकट श्रवनूं रसनूं
इन्द्री कह्या न मानैं हो राम
गांइकु ठाकुर खेत कुनापै
काइथ खरच न पारै
जोरि जेवरी खेति पसारै
सब मिलि मोको मारै हो राम
खोटो महतो बिकट बलाही
सिर कसदम का पारै
बुरौ दिवान दादि नहिं लागै
इक बांधै इक मारै हो राम
धरम राइ जब लेखा मांगा
बाकी निकसी भारी
पांचि किसाना भाजि गये हैं
जीव धर बांध्यो पारी हो राम
कहै कबीर सुनहु रे संतो
हरि भजि बांध्यो भेरा
अब की बेर बकसि बंदे कौं
सब खत करौं निबेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवधू मेरा मन मतिवारा
उन्मनि चढ़ा मगन रस पीवै त्रिभवन भया उजियारा
गुड़ करि ग्यांन ध्यान कर महुंवा
भव भाठी कर भारा
सुषमन नारी सहजि समानी
पीवै पीवन हारा
दोइ पुड़ जोड़ि चिगाई भाठी
चुया महा रस भारी
काम क्रोध दोइ किया पलीता
छूटि गई संसारी
सुन्नि मंडल में मंदला बाजै
तहां मेरा मन नाचै
गुर प्रसादि अमृत फल पाया
सहजि सुषमना काछै
पूरा मिल्या तबैं सुष उपज्यो
तन की तपति बुझानी
कहै कबीर भव बन्धन छूटै
जोतिहि जोति समानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवधू गगन मंडल घर कीजै
अमृत झरै सदा सुख उपजै
बंक नालि रस पीवै
मूल बांधि सर गगन समाना
सुषमन यों तन लागी
काम क्रोध दोउ भया पलीता
तहां जोगनीं जागी
मनवां जाइ दरीवै बैठा
मगन भया रसि लागा
कहै कबीर जिय संसा नाहीं
सबद अनाहद जागा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई पीवै रे रस राम नाम का, जो पीवै सो जोगी रे
संतों सेवा करो राम की और न दूजा भोगी रे
यहु रस तौ सब फीका भया
ब्रह्म अगनि पर जारी रे
ईश्वर गौरी पीवन लागे राम तनी मतवारी रे
चन्द सूर दोई भाठी कीन्ही सुषमनि त्रिगवा लागी रे
अमृत कूंपी सांचा पुरया मेरी त्रिष्णा भागी रे
यहु रस पीवै गूंगा गहिला ताकी कोई बूझै सार रे
कहै कबीर महा रस महँगा कोई पीवैगा पीवनिहार रे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूभर पनियां भरया न जाई
अधिक त्रिषा हरि बिन न बुझाई
ऊपर नीर लेज तलि हारी
कैसे नीर भरै पनिहारी
ऊधरयो कूप घाट भयो भारी
चली निरास पंच पनिहारी
गुर उपदेस भरी ले नीरा
हरषि हरषि जल पीवै कबीरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लावौ बाबा आगि जलावो घरा रे
ता कारनि मन धंधै परा रे
इक डाँइनि मेरे मन में बसे रे
नित उठि मेरे जीय कों डसे रे
ता डाइन के लरिका पांच रे
निसि दिन मोहिं नचावें नाच रे
कहै कबीर हूँ ताको दास
डांइनि कै संग रहै उदास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रे मन बैठि किते जिनि जासी
हिरदै सरोवर है अबिनासी
काया मधे कोटि तीरथ
काया मधे कासी
काया मधे कंवलापति
काया मधे बैकुंठ वासी
उलटि पवन षटचक्र निवासी
तीरथराज गंग तट वासी
गगनमंडल रवि ससि दोई तारा
उलटी कूंची लाग किवारा
कहै कबीर भयो उजियारा
पंच मारि एक रहयो निनारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरवर तटि हंसनीं तिसाई
जुगति बिनां हरि जल पिया न जाई
पीया चाहै तौ लै खग सारी
उड़ि न सकै दोऊ पर भारी
कुंभ लियें ठाढ़ी पनिहारी
गुण बिन नीर भरै कैसे नारी
कहै कबीर गुर एक बुधि बताई
सहज सुभाइ मिले राम राई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोलौ भाई राम की दुंहाई
इहि रस सिव सनकादिक माते, पीवत अजहु न अघाई
इला प्यंगुला भाठी कीन्हों ब्रह्म अगनि पर जारी
ससि हर सूर द्वार दस मूंदे, लागी जोग जुग तारी
मति मतवाला पीवै राम रस, दूजा कछु न सुहाई
उलटी गङ्ग नीर बहि आया, अमृत धार चुवाई
पंच जने सो संग करि लीन्हे, चलत खुमारी लागी
प्रेम पियाले पीवन लागे, सोवत नागिनी जागी
सहज सुन्नि में जिनि रस चाख्या, सतगुर थैं सुधि पाई
दास कबीर इहि रसि माता, कबहूं उछकि न जाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विष्णु ध्यान सनान करि रे,
बाहरि अंग न धोइ रे
साच बिन सीझसि नहीं
कोई ज्ञान दृष्टैं जोइ रे
जंजाल मांहें जीव राखै
सुधि नहीं सरीर रे
अभि अन्तरि भेदै नहीं
कोई बाहिर न्हावै नीर रे
निहकर्म नदी ज्ञान जल
सुन्नि मण्डल मांहिं रे
औधूत जोगी आतमां
कोई पेड़े संजमि न्हानि रे
इला प्यङ्गुला सुषमनां
पछिम गङ्गा बालि रे
कहै कबीर कुसमल झड़ैं
कोई मांहि लौ अंग पषालि रे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सो जोगी जाकै सहज भाइ
    अकल प्रीति की भीख खाइ
सबद् अनाहद सींगी नाद
    काम क्रोध विषिया न बाद
मन मुद्रा जाकै गुर कौ ज्ञान ।
    त्रिकुट कोट में धरत ध्यान
मनहीं करन कौ करैं सनान
    गुर को सबद लै लै धरैं ध्यान
काया कासी खोजै वास
    तहाँ जोति सरूप भयो परकास
ग्यान मेषली सहज भाइ
    बंक नालि कौ रस खाइ
जोग मूल को देइ बन्द
    कहि कबीर थिर होइ कन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जङ्गल में का सोवना, औघट है घाटा ।
स्यंघ बाघ गज प्रजलै, अरु लम्बीं बाटा ॥
निसि बासुरी पेड़ा पड़ै
जमदांनी लूटै
सूर धीर साचै मतै
सोई जन छूटै
चालि चालि मन माहरा
पुर पटन गहिये
मिलिये त्रिभुवन नाथ सों
निरभै होइ रहिए
अमर नहीं संसार में
बिनसै नर देही
कहै कबीर बेसास सूं
भजि राम सनेही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम बिन तन की ताप न जाई
जल की अगिन उठी अधिकाई
तुम्ह जलनिधि मैं जल कर मीना
जल मैं रहों जलहिं बिन छीना
तुम्ह पिंजरा मैं सुवना तोरा
दरसन देहु भाग बड़ मोरा
तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला
कहै कबीर राम रमूं अकेला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम बान अन्ययाले तीर
जाहि लागे सो जाने पीर
तन मन खोजों चोट न पाऊं
औषद मूली कहां घसि लाऊं
एकहि रूप दीसे सब नारी
ना जानों को पिग्रहि पियारी
कहै कबीर जा मस्तक भाग
ना जानु काहू देइ सुहाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भँवर उड़े बग बैठे आई
रैन गई दिवसो चलि जाई
हल हल काँपै बाला जीउ
ना जानों का करि है पीउ
कांचे बासन टिकै न पानी
उड़िगै हंस काया कुंभिलानी
काग उड़ावत भुजा पिरानी
कहहि कबीर यह कथा सिरानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखि देखि जिय अचरज होई
यह पद बूझै बिरला कोई
धरती उलटि अकाशै जाय
चिउंटी के मुख हस्ति समाय
बिना पवन सो पर्वत उड़े
जीव जन्तु सब वृक्षा चढ़े
सूखे सरवर उठे हिलोरा
बिनु जल चकवा करत किलोरा
बैठा पंडित पढ़े पुरान
बिन देखे का करत बखान
कहहि कबीर यह पद को जान
सोई संत सदा परबान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं सबनि में औरनि में हूँ सब
मेरी बिलगि बिलगि बिलगाई हो
कोई कहौ कबीर कोई कहौ राम राई हो
ना हम बार बूढ़ नांही हम
नां हमरे चिलकाई हो
पठरा न जाऊं अरवा नहीं आंऊं
सहजि रहूं हरिभाई हो
बोढ़न हमरे एक पछेवरा
लोक बोलैं इकताई हो
जुलहै तनि बुनि पांन न पावल
फारि बुनी दस ढाई हो
त्रिगुण रहित फल रमि हम राखल
तब हमरौ नांउं राम राई हो
जग मैं देखौं जग न देखै मोही
इहि कबीर कछु पाई हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब मैं जाणि बौरे केवल राइ की कहानी
संझा जोति राम प्रकासै
गुर गमि बाणीं
तरवर एक अनंत मूरति
सुरता लेहु पिछाणी
साखा पेड़ फूल फल नांही
ताकी अमृत बाणी
पुहप वास भँवरा एक राता
बारा ले उर धरिया
सोलह मंझै पवन झकोरै
आकासे फल फलिया
सहज समाधि विरष यहु सींचा
धरती जल हर सोष्या
कहै कबीर तास मैं चेला
जिनि यहु तरबर पेष्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवधू, सो जोगी गुरु मेरा
जो या पद का करै निवेरा
तरवर एक पेड़ बिन ठाढ़ा
बिन फूला फल लागा
साखा पत्र कछू नहीं वाके
अष्ट गगन मुख बागा
पैर बिन निरति करां बिन बाजै
जिभ्या हींणा गावै
गावणहारे के रूप न रेषा
सतगुरु होइ लखावै
पंखी का खोज, मीन का मारग
कहै कबीर बिचारी
अपरंपार पार परसोतम
या मूरति की बलिहारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अजहूँ बीच कैसे दरसन तोरा
बिन दरसन मन मानें क्यों मेरा
हमहि कुसेवग क्या तुम्हहि अजांनां
दुह मैं दोस कहौ किन रांमां
तुम्ह कहियत त्रभुवन पति राजा
मन वांछित सब पुरवन काजा
कहैं कबीर हरि दरस दिखाश्रो
हमहिं बुलावो कै तुम्ह चलि श्राश्रो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आऊंगा न जाऊंगा, मरूंगा न जिऊंगा
गुरु के सबद में रमि रमि रहूंगा
आप कटोरा आपै थारी
आपै पुरखा आपै नारी
आप सदाफल आपै नींबू
आपै मुसलमान आपै हिन्दू
आपै मछकछ आपै जाल
आपै भींवर आपै काल
कहै कबीर हम नाहीं रे नाहीं
ना हम जीवत न मुवले मांही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अकथ कहानी प्रेम की
कछू कही न जाई
गूंगे केरि सरकरा
बैठे और मुसकाई
भोमि बिना अरु बीज बिन
तरवर एक भाई
अनंत फल प्रकासिया,
गुरु दीया बताई
मन थिर बैसि बिचारिया,
रामहि ल्यौ लाई
झूठी मन मैं बिस्तरी
सब थोथी बाई
कहै कबीर सकति कछु नाहीं
गुर भया सहाई
आवण जाणी मिटि गई,
मन मनहि समाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोका जानि न भूलो भाई
खालिक खलिक खलक में
खालिक सबघट रह्मो समाई
अला एकै नूर उपनाया
ताकी कैसी निन्दा
ता नूर थैं सब जग कीया
कौन भला कौन मन्दा
ता अला की गति नहीं जानी
गुरि गुड़ दीया मीठा
कहै कबीर मैं पूरा पाया
सब घट साहिब दीठा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कोई गुरुज्ञानी जग उलटि बेद बूझै
पानी में पावक बरै, अंधहि आंखन सूझै
गाई तो नाहर खायो, हरिन खायो चीता
काग लंगर फांदि कै बटेर बाज जीता
मूस तो मजार खायो, स्यार खायो स्वाना
आदि कोऊ उदेश जाने, तासु बेश बाना
एकहि दादुर खायो, पांच खायो भुवंगा
कहहि कबीर पुकार के है दोऊ एकै संगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं डोरे डोरे जाऊंगा, तो मैं बहुरि न भौजलि आऊंगा
सूत बहुत कुछ थोरा, ताथैं लाई ले कंथा डोरा
कंथा डोरा लागा जब जुरा मरण भौ भागा
जहां सूत कपास न पूनी, तहां बसे एक सूनी
उस सूनी सूं चित लाऊंगा,
तो मैं बहुरि न भौजलिआऊंगा
मेर डंड इक छाजा, तहां बसै इक राजा
तिस राजा सूंचित लाऊँगा,
तो मैं बहुरि न भौजलि आऊंगा
जहां बहु हीरा घन मोती, तहां तत लाइ ले जोती
तिस जोतहिं जोति मिलाऊंगा,
तो मैं बहुरि न भौजलि आऊंगा
जहां ऊगै सूर न चन्दा, तहां देष्या एक अनंदा
उस आनंद सूं चित लाऊंगा
तो मैं बहुरि न भौजलि आऊंगा
मूल बंध एक पाया, तहां सिंह गणेश्वर राजा
तिस मूलहिं मूल मिलाऊंगा
तो मैं बहुरि न भौजलि आऊंगा
कबीरा तालिब तोरा, तहां गोपाल हरी गुर मोरा
तहां हेत हरी चित लाऊंगा
तो मैं बहुरि न भौजलि आऊंगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब घट प्रगट भये राम राई
सोधि सरीर कंचन की नाई
कनक कसौटी जैसे कसि लेइ सुनारा
सोधि सरीर भयो तन सारा
उपजत उपजत बहुत उपाई
मन थिर भयो तबै थिति पाई
बाहर खोजत जनम गंवाया
उनमना ध्यान घट भीतर पाया
बिन परचै तन कांच कथीरा
परचै कंचन भया कबीरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम सब मांहि सकल हम मांही
हम थैं और दूसरा नांही
तीन लोक में हमारा पसारा
आवागमन सब खेल हमारा
खट दरसन कहियत हम भेखा
हमहीं अतीत रूप नहीं रेखा
हमहीं आप कबीर कहावा
हमहीं अपना आप लखावा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुरि हम काहे कूं आवहिंगे
बिछुरे पञ्चतत्त की रचना
तब हम रामहिं पावहिंगे
पृथ्वी का गुण पानी सोष्या
पानी तेज मिलावहिंगे
तेज पवन मिलि पवन सबद मिलि
ये कहि गालि तवावहिंगे
ऐसे हम लोक वेद के बिछुरे
सुन्नहि मांहि समावहिंगे
जैसे जलदि तरंग तरंगनी
ऐसे दम दिखलावहिंगे
कहै कबीर स्वामी सुख सागर
हंसहि हंस मिलावहिंगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दरियाव की लहर दरियाव है जी
दरियाव और लहर में भिन्न कोयम
उठे तो नीर है बैठे तो नीर है
कहो दूसरा किस तरह होयम
उसी नाम को फेर के लहर धरा
लहर के कहे क्या नीर खोयम
जक्त ही फेर सब जक्त और ब्रह्म में
ज्ञान करि देख कब्बीर गोयम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कोई दिल दरवेश तेरा
नासूत मलकूत जबरूत को छोड़िके
जाइ लाहूत पर करै डेरा
अकिल की फहम ते इलम रोसन करै
चढ़ै खरसान तब होय उजेरा
हिर्स हैवान को मारि मरदन करै
नफस सैतान जब होय जेरा
गौस औ कुतुव दिल फिकर जाका करै
फतह कर किला तहं दौर फेरा
तखत पर बैठिके अदल इन्साफ़ कर
दोजख औ भिस्त का करु निवेरा
अजाब सवाब का सबब पहुंचे नहीं
जहां है यार महवूब मेरा
कहै कब्बीर वह छोड़ि आगे चला
हुआ असवार तब दिया दरेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन मस्त हुआ तब क्यों बोलै
हीरा पायो गांठ गठियायो
बार बार वाको क्यों खोलै
हलकी थी जब चढ़ी तराजू
पूरी भई तब क्यों तोलै
सुरत कलारी भई मतवारी
मदवा पी गई बिन तोलै
हंसा पाये मान सरोवर
ताल तलैया क्यों डोलै
तेरा साहिब है घट मांहीं
बाहर नैना क्यों खोलै
कहै कबीर सुनो भई साधो
साहिब मिल गये तिल ओलै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोरी गठरी में लागे चोर
बटोहिया का रे सोवै
पांच पचीस तीन हैं चुरवा
यह सब कीन्हा सोर
बटोहिया का रे सोवै
जागु सवेरा बाट अनेड़ा
फिर नहि लागै जोर
बटोहिया का रे सोवै
भवसागर इक नदी बहतु है
बिन उतरे जाव बोर
बटोहिया का रे सोवै
कहै कबीर सुनो भाइ साधो
जागत कीजे भोर
बटोहिया का रे सोवै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिया मोरा जागै मैं कैसे सोइ री
पांच सखी मेरे संग की सहेली
उन रंग रंगी पिया रंग न मिली री
सास सयानी ननद द्योरानी
उन डर डरी पिय सार न जानी री
द्वादस ऊपर सेज बिछानी
चढ़ न सकौं मारी लाज लजानीं री
रात दिवस मोंहि कूका मारै
मैं न सुना रचि रहि संग जार री
कह कबीर सुनु सखी सयानी
बिन सतगुर पिय मिले न मिलानी री

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ये अंखियां अलसानी हो
पिय सेज चलो
खंभ पकरि पतंग अस डोलै
बोलै मधुरी बानी
फूलन सेज बिछाय जो राख्यो
पिया बिना कुम्हिलानी
धीरे पांव धरो पलंगा पर
जागत ननद जिठानी
कहै कबीर सुनो भाइ साधो
लोक लाज बिलछानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नैहरवा हमका नहिं भावै
सांई की नगरी परम अति सुन्दर
जहं कोई जाय न आवै
चांद सुरज जहं पवन न पानी
को संदेस पहुंचावै
दरद यह सांई को सुनावै
आगे चलौं पंथ नहिं सूझै
पीछे दोस लगावै
केहि विधि सुसरे जाउं मोरी सजनी
बिरहा जोर जनावै
विषै रस नाच नचावै
बिन सतगुरु अपनो नहिं कोई
जो यह राह बतावै
कहत कबीर सुनो भाई साधो
सुपने न प्रीतम पावै
तपन यह जिय की बुझावै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिय ऊंची रे अटरिया तोरी देखन चली
ऊंची अटरिया जरद किनरिया
लगी नाम की डोरिया
चांद सुरज सम दियना बरत हैं
ता बिच भूली डगरिया
पांच पचीस तीन घर बनिया
मनुआं है चौधरिया
मुंशी है कोतवाल ज्ञान को
चहुं दिसि लगी बजरिया
आठ मरातिब दस दरवाजे
नौ में लगी किवरिया
खिरकि बैठ गोरी चितवन लागी
उपरां झांप झोपरिया
कहत कबीर सुनों भाई साधो
गुरु चरनन बलहरिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूंघट का पट खोल रे
तोको पीव मिलैंगे
घट घट में वोहि सांई रमता
कटुक बचन मत बोल रे
धन जोबन का गर्व न कीजे
झूठा पंचरंग चोल रे
सुन्न महल में दिया न बार ले
आसा से मत डोल रे
जोग जुगत से रंग महल में
पिय पाये अनमोल रे
कह कबीर आनन्द भयो है
बाजत अनहद ढोल रे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नैहर में दाग लगाय आई चुनरी
ऊ रंगरेजवा कै मरम न जानै
नहिं मिलै धोबिया कवन करै उजरी
तन कै कूंडी ज्ञान सउंदन
साबुन महंग बिकाय या नगरी
पहिरि ओढ़ि कै चली ससुरिया
गौवां के लोग कहैं बड़ी फुहरी
कहत कबीर सुनो भाई साधो
बिन सतगुरु कबहूं नहिं सुधरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोरी चुनरी में परि गयो दाग पिया
    पंच तत्त कै बनी चुनरिया
सोरह सै बंद लागे जिया
    यह चुनरी मोरे मैके ते आई
ससुरे में मनुआं खोय दिया
    मलि मलि धोई दाग न छूटै
ज्ञान को साबुन लाय पिया
    कहत कबीर दाग तब छुटि है
जब साहब अपनाय लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सतगुर हैं रंगरेज चुनर मोरी रंग डारी।
स्याही रंग छुड़ाय के रे
दियो मजीठा रंग
धोये से छूटै नहीं रे
दिन दिन होत सुरंग
भाव के कुंड नेह के जल में
प्रेम रंग दई बोर
चसकी चास लगाइ के रे
खूब रंगी झकझोर
सतगुर ने चुनरी रंगी रे
सतगुर चतुर सुजान
सब कछु उन पर वार दूं रे
तन मन धन औ प्रान
कह कबीर रंगरेज गुर रे
मुझ पर हुए दयाल
सीतल चुनरी ओढ़ के रे
भइ हों मगन निहाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झीनी झीनी बीनी चदरिया

काहे क ताना काहे कै भरनी

कौन तार से बीनी चदरिया

इंगला पिंगला ताना भरनी

सुषमन तार से बीनी चदरिया

आठ कमल दल चरखा डोलै

पांच तत्त गुन तीनी चदरिया

सांई को सियत मास दस लागे

ठोक ठोक कै बीनी चदरिया

सो चादर सुरनर मुनि ओढ़ी

ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया

दास कबीर जतन से ओढ़ी

ज्यों की त्यों धरि दीनीं चदरिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मो को कहां ढूंढ़ै बन्दे,
मैं तो तेरे पास में
ना मैं बकरी ना मैं भेड़ी
ना मैं छुरी गंड़ास में
नहीं खाल में नहीं पोंछ में
ना हड्डी ना मांस में
ना मैं देवल ना मैं मसजिद
ना कावे कैलास में
ना तो कौनों क्रिया कर्म में
नहीं जोग बैराग में
खोजी होय तुरतै मिलिहों
पल भर की तलास में
मैं तो रहौं सहर के बाहर
मेरी पुरी मवास में
कहै कबीर सुनो भाई साधो
सब सांसों की सांस में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख

कबीर का संक्षिप्त जीवन-विवरण

हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की सृष्टि करने वाले कबीर का जीवन-वृत्त अभी तक अंधकार में है, उसका निर्णय अभी तक नहीं हो पाया। कबीर एक मत के प्रवर्तक थे, इसलिए उनके अनुयायी अभी तक वर्तमान हैं और उन्हीं के द्वारा कुछ ज्ञातव्य बातों का पता लगता है। इधर कुछ विद्वानों ने भी अनुमान पर उनके आविर्भाव-काल एवं जीवन पर प्रकाश डाला है पर कहा नहीं जा सकता कि वह कहाँ तक प्रामाणिक है।

वेस्कट ने अपनी किताब "कबीर एन्ड दि कबीर पन्थ" में कबीर का जन्म सं० १४९७ माना है, विलसन ने १५०५।

मेक्स आर्थर मैकलिफ़ ने 'दि सिख रिलीजन' नामक पुस्तक के ६वें भाग में कबीर का जन्म जेष्ठ संवत् १४५५ विक्रमी दिया है। यह तिथि उन्होंने कदाचित् कबीर-चरित्र-बोध के १७९० पृष्ठ से ली है, जहाँ लिखा है :—

कबीर साहिब का काशी में प्रकट होना।

संवत् चौदह सौ पचपन विक्रमी जेष्ठ सुदी पूर्णिमा सोम्बार के दिन सत्यपुरुष का तेज काशी के लहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तालाब में उतरा—उस समय पृथ्वी और आकाश प्रकाशित हो गया।

कबीर पंथियों में एक दोहा प्रचलित है :—

चौदह सै पचपन साल गए, चन्द्रबार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रगट भए॥

इसी के अनुसार कबीर-पंथी लोग १४५५ को कबीर का जन्म संवत् मानते हैं पर ज्योतिष की गणना करने से चन्द्रवार को जेष्ठ शुक्ल पूर्णिमा नहीं पड़ती। यदि 'गए' शब्द को हम व्यतीत के अर्थ में मान लें, अर्थात् १४५५ साल के व्यतीत होने पर जेष्ठ मास में चन्द्रवार को कबीर उत्पन्न हुए तो यह बात ज्योतिष के अनुसार भी मानी जा सकती है क्योंकि गणना से सं० १४५६ में चन्द्रवार को ही ज्येष्ठ पूर्णिमा पड़ती है। अतएव जब तक हमें और कोई निश्चित् तिथि न मिले तब तक हम कबीर का जन्म संवत् १४५६ ही मानेंगे।

कबीर की मृत्यु के विषय में यह दोहा कबीर-पंथी लोग कहते हैं :—

सम्बत् पन्द्रह सै पछत्तरा कियो मगहर को गौन
माघ सुदी एकादशी रलो पवन में पवन

अर्थात् सं० १५७५ में मगहर में कबीर का देहान्त हुआ।

कबीर की 'बानी' से ज्ञात होता है कि वे सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। उसने उन पर अत्या-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चार भी किये थे। सिकंदर लोदी का राज्य सन् १५१७ (संवत १५७४) से सन् १५२६ (संवत् १५८३) तक रहा था। इस लिए कबीर का संवत् १५७४ तक रहना निश्चित है। उनकी मृत्यु-तिथि १५७४ के बाद ही समझनी चाहिए। यदि उनकी मृत्यु १५७५ में हो गई हो तो कोई अयुक्ति-संगत बात नहीं है। जो हो, अभी तक कबीर के जन्म और मृत्यु की तिथियाँ अनुमान पर ही निर्भर हैं। जन्म-तिथि १४५६ है और मृत्यु-तिथि १५७५। इसके अनुसार कबीर ११९ वर्ष जीते रहे।

किंवदंती है कि कबीर की माता एक ब्राह्मण की विधवा कन्या थी। कन्या का पिता काशी में रामानन्द का बड़ा भक्त था। एक दिन वह अपनी कन्या के सहित रामानन्द के दर्शन करने गया। कन्या ने भी रामानन्द को प्रणाम किया। उत्तर में उन्होंने उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। ब्राह्मण ने व्यथित होकर अपनी पुत्री की वैधव्य-कथा कह दी। रामानन्द ने कहा, "मेरा कथन मिथ्या तो हो नहीं सकता। तुम्हारी कन्या के पुत्र होगा पर वह कलंक-रहित रहेगी।" आशीर्वाद फलीभूत हुआ और कुछ दिवसों के पश्चात् कन्या ने एक पुत्र को जन्म दिया। लोकापवाद के डर से उसने उसे लहर तालाब के समीप छोड़ दिया। उसी समय एक जुलाहा, जिसका नाम नीरू था अपनी नव-विवाहिता स्त्री नीमा के साथ उधर से गुज़रा। एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवजात शिशु को देख कर उनके हृदय में पुत्र-लालसा उत्पन्न हुई और उन्होंने उसे उठा कर अपने घर की राह ली। उसी जुलाहे ने कबीर का पालन-पोषण किया। कबीर जुलाहे के घर में पालित होने के कारण अपने को जुलाहा मानते थे। उन्होंने लिखा भी है :—

तूँ बाम्हन मैं कासी का जुलहा बूझहु मोर गियाना

कुछ कबीरपंथियों का मत है कि वे उस विधवा ब्राह्मण कन्या की हथेली से उत्पन्न हुए थे इसीलिए वे करबीर (हाथ के पुत्र) या कबीर कहलाए। अन्य कबीरपंथी तो अलौकिक रीति से उनका पृथ्वी में उत्पन्न होना बतलाते हैं। 'कबीर-चरित्र-बोध' में लिखा है कि 'सत्पुरुष का तेज काशी के लहर तालाब में उतरा···जिस समय वह प्रकाश तालाब में उतरा उस समय समस्त तालाब जगमग-जगमग करने लगा। वह तेज बालक के आकार में हुआ। उस जल के ऊपर वह कमलों के पुष्पों में उतराने और बालकों के सदृश हाथ पांव फेंकने लगा। वह तेज अपनी समस्त प्रभाओं को पृथक् करके मनुष्य के बच्चे के आकार में दिखलाई दिया।'

यह वर्णन तो इतना अलौकिक है कि आजकल शायद कोई भी इस पर विश्वास न कर सकेगा। जो हो, इतना मान्य है कि कबीर लहर तालाब के पास पाये गये थे, जुलाहे द्वारा पालित हुए थे—वे जुलाहे के औरस पुत्र नहीं थे।

कबीर शिशुपन से ही अक्खड़ थे। वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भजन गाया करते थे और लोगों को उपदेश दिया करते थे पर वे 'निगुरा' (बिना गुरु के) होने के कारण लोगों में आदर के पात्र नहीं थे और उनके भजनों अथवा उपदेशों को भी कोई सुनना पसंद नहीं करता था। इस कारण वे अपना गुरु खोजने की चिन्ता में व्यस्त हुए। उस समय काशी में रामानन्द की बड़ी प्रसिद्धि थी। कबीर उन्हीं के पास गये पर कबीर के मुसलमान होने के कारण उन्होंने उन्हें अपना शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। वे हताश तो बहुत हुए पर उन्होंने एक चाल सोची। प्रातःकाल अंधेरे ही में रामानन्द पंचगङ्गा घाट पर नित्य स्नान करने के लिए जाते थे। कबीर पहिले से ही उनके रास्ते में घाट की सीढ़ियों पर लेट रहे। रामानन्द जैसे ही स्नानार्थ आए वैसे ही उनके पैर की ठोकर कबीर के सिर में लगी। ठोकर लगने के साथ ही रामानन्द के मुख से पश्चात्ताप के रूप में 'राम' 'राम' शब्द निकल पड़ा। कबीर ने उसी समय उनके चरण पकड़ कर कहा कि महाराज, आज से आपने मुझे राम नाम से दीक्षित कर अपना शिष्य बना लिया। आज से आप मेरे गुरु हुए। रामानन्द ने प्रसन्न हो कबीर को हृदय से लगा लिया। उसी समय से कबीर रामानन्द के शिष्य कहलाने लगे। बाबू श्यामसुंदरदास ने अपनी पुस्तक कबीर ग्रन्थावली में लिखा है:

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"केवल किंवदंती के आधार पर रामानन्द को उनका गुरु मान लेना ठीक नहीं। यह किंवदंती भी ऐतिहासिक जाँच के सामने ठीक नहीं ठहरती। रामानन्द जी की मृत्यु अधिक से अधिक देर में मानने से संवत् १४६७ में हुई, इससे १४ या १५ वर्ष पहले भी उसके होने का प्रमाण विद्यमान है। उस समय कबीर की अवस्था ११ वर्ष की रही होगी, क्योंकि हम ऊपर उनका जन्म १४५६ सिद्ध कर आए हैं। ११ वर्ष के बालक का घूम फिर कर उपदेश देने लगना सहसा ग्राह्य नहीं होता। और यदि रामानन्द जी की मृत्यु संवत् १४५२-५३ के लगभग हुई तो यह किंवदंती झूठ ठहरती है; क्योंकि उस समय तो कबीर को संसार में आने के लिए अभी तीन चार वर्ष रहे होंगे।"

बाबू साहिब ने यह नहीं लिखा कि रामानन्द की मृत्यु की तिथि उन्होंने किस प्रामाणिक स्थान से ली है। नाभादास के भक्तमाल की टीका करनेवाले प्रियादास के अनुसार रामानन्द की मृत्यु १५०५ विक्रमी में हुई इसके अनुसार रामानन्द की मृत्यु के समय कबीर की अवस्था ४९ वर्ष की रही होगी। उस अवस्था में या उसके पहिले कबीर क्या कोई भी भक्त घूम-फिर कर उपदेश दे सकता है और रामानन्द का शिष्य बन सकता है। फिर कबीर ने लिखा है :—

काशी में हम प्रगट भये हैं रामानन्द चिताए।

कुछ विद्वानों का मत है कि शेख तक़ी कबीर के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु थे। पर जिस गुरु को कबीर ईश्वर से भी बड़ा मानते थे उस गुरु शेख़ तक़ी के लिए ऐसा नहीं कह सकते थे :—

घट घट है अविनासी सुनहु तकी तुम शेख

हाँ, यह अवश्य हो सकता है कि वे शेख़ तक़ी के सत्सङ्ग में रहे हों और उनसे उनका पारस्परिक व्यवहार हो।

कबीर का विवाह हुआ था अथवा नहीं, यह सन्देहात्मक है। कहते हैं कि उनकी स्त्री का नाम लोई था। वह एक बनखंडी बैरागी की कन्या थी। उसके घर पर एक रोज़ सन्तों का समागम था। कबीर भी वहाँ थे। सब सन्तों को दूध पीने को दिया गया। सबने तो पी लिया, कबीर ने अपना दूध रखा रहने दिया। पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया कि एक सन्त आ रहा है, उसके लिए यह दूध रख दिया गया है। कुछ देर में एक सन्त उसी कुटी पर पहुँचा। सब लोग कबीर की शक्ति पर मुग्ध हो गये। लोई तो भक्ति से इतनी विह्वल हो गई कि वह इनके साथ रहने लगी। कोई लोई को कबीर की स्त्री कहते हैं, कोई शिष्या। कबीर ने निस्सन्देह लोई को सम्बोधित कर पद लिखे हैं :—

उदाहरणार्थ

कहत कबीर सुनहु रे लोई
हम तुम बिनसि रहैगा सोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्भव है, लोई उनकी स्त्री हो पीछे सन्त-स्वभाव से उन्होंने उसे शिष्या बना लिया हो। उन्होंने अपने गार्हस्थ जीवन के विषय में भी लिखा है :—

नारी तो हम भी करी, पाया नहीं विचार
जब जानी तब परिहरी नारी बड़ा विकार

कहते हैं, लोई से इन्हें दो सन्तान थीं। एक पुत्र था कमाल, और दूसरी पुत्री थी कमाली। जिस समय ये अपने उपदेशों से प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे थे उस समय सिकंदर लोदी तख़्त पर बैठा था (१५४५ विक्रमी)। उसने कबीर के अलौकिक कृत्यों की कहानी सुनी। उसने कबीर को बुलाया और जब कबीर को स्वयं अपने को ईश्वर कहते पाया तो क्रोध में आकर उन्हें आग में फेंका, पर वे साफ़ बच गये, तलवार से काटना चाहा पर तलवार उनका शरीर बिना काटे ही उनके भीतर से निकल गई। तोप से मारना चाहा पर तोप में जल भर गया। हाथी से चिराना चाहा पर हाथी डर कर भाग गया।

ऐसे अलौकिक कृत्यों में कहाँ तक सत्यता है, यह संभवतः कोई विश्वास न करे पर महात्मा या संतों के साथ ऐसी कथाओं का जोड़ना आश्चर्य-जनक नहीं है।

मृत्यु के समय कबीर काशी से मगहर चले आए थे। उन्होंने लिखा है :—

सकल जनम शिवपुरी गँवाया
मरति बार मगहर उठि धाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह विश्वास है कि काशी में मरने से मोक्ष मिलती है मगहर में मरने से नर्क। पर कबीर ने कहा :—

जौ काशी तन तजै कबीरा
तौ रामहि कौन निहोरा

वे तो यह चाहते थे कि यदि मैं सच्चा भक्त हूँ तो चाहे काशी में मरूँ चाहे मगहर में, मुझे मुक्ति मिलनी चाहिए। यही विचार कर वे मगहर चले गये। उनके मरने के समय हिन्दू मुसलमानों में उनके शव के लिए झगड़ा उठा। हिन्दू दाह-कर्म करना चाहते थे और मुसलमान गाड़ना। आकाश-वाणी हुई कि कफ़न उठाओ। कफ़न उठाने पर शव के स्थान पर फूल-राशि दिखलाई पड़ी जिसे हिन्दू मुसलमानों ने सरलता से अर्ध भागों में विभाजित कर लिया। हिन्दू और मुसलमान दोनों सन्तुष्ट हो गये।

कविता की भाँति कबीर का जीवन भी रहस्य से परिपूर्ण है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग

कबीर की कविता से सम्बन्ध रखने वाले हठयोग और सूफ़ी मत में प्रयुक्त कुछ विशिष्ट शब्दों के अर्थ :—

(अ)–हठयोग

१—अवधू

यह अवधूत का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ है, जो संसार से वैराग्य लेकर संसार के बन्धन से अपने को अलग कर लेता है।

यो विलंध्याश्रमान् वर्णान् अत्मन्येव स्थितः प्रमान।
अति वर्णाश्रमी योगी अवधूतः स उच्यते॥

ऐसा भी कहा जाता है कि यह नाम रामानन्द ने अपने अनुयायियों और भक्तों को दे रक्खा था क्योंकि उन्होंने रामानुजाचार्य के कर्मकाण्डों की उपेक्षा कर दी थी।

२—अमृत

ब्रह्मरंध्र में स्थित सहस्त्र-दल-कमल के मध्य में एक योनि है। उसका मुख नीचे की ओर है। इस के मध्य में एक चन्द्राकार स्थान है जिससे सदैव अमृत का प्रवाह होता है। यह ईड़ा नाड़ी द्वारा बहता है और मनुष्य को दीर्घायु बनाने में सहायक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता है। जो प्राणायाम के साधनों से अनभिज्ञ हैं, उनका अमृत-प्रवाह मूलाधार-चक्र मे स्थित सूर्य द्वारा शोषण कर लिया जाता है। इसी अमृत के नष्ट होने से शरीर वृद्ध बनता है। यदि अभ्यासी इस अमृत का प्रवाह कण्ठ को बंद कर रोक ले तो उसका उपयोग शरीर की वृद्धि ही में होगा। उसी अमृत-पान से वह अपने शरीर को जीवन की शक्तियों से पूर्ण कर लेगा और यदि तक्षक भी उसे काट ले तो उसके शरीर में विष का संचार न होगा।

३—अनाहद

योगी जब समाधिस्थ होता है तो उसके शून्य अथवा आकाश (ब्रह्मरंध्र के समीप के वातावरण में एक प्रकार का संगीत होता है जिससे वह मस्त होकर ईश्वर की ओर ध्यान लगाये रहता है।

४—इला (ईड़ा)

मेरुदण्ड के बाएँ ओर की नाड़ी जिसका अन्त नाक के दाहिने ओर होता है।

५—कहार (पांच)

पांच ज्ञानेन्द्रियाँ।

आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।

६—काशी

अज्ञा-चक्र के समीप ईड़ा (गंगा या बरना) और पिंगला (यमुना या असी) के मध्य का स्थान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काशी (वाराणसी) कहलाता है। यहाँ विश्वनाथ का निवास है।

इड़ा हि पिंगला ख्याता वरणासीति होच्यते
वाराणसी तयोर्मध्ये विश्वनाथोत्र भाषितः
(शिवसंहिता, पंचम पटल, श्लोक १००)

७—किसान (पंच)

शरीर में स्थित पंच प्राण
उदान, प्रान, समान, अपान और व्यान।
उदान—मस्तिष्क में
प्रान—हृदय में
समान—नाभि में
अपान—गुह्य स्थान में
व्यान—समस्त शरीर में

८—खसम

सत्पुरुष (देखिए माया की विवेचना)

९—गंगा

ईड़ा नाड़ी ही गंगा के नाम से पुकारी जाती है। कभी कभो इसे बरना भी कहते हैं। इस नाड़ी से सदैव अमृत का प्रवाह होता है। यह अज्ञा-चक्र के दाहिने ओर जाती है।

१०—गगन

(शून्य देखिए)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११—घट

शरीर

१२—चन्द

ब्रह्मरंध्र में सहस्रदल कमल है। उसमें एक योनि है जिसका मुख नीचे की ओर है। इस योनि के मध्य में एक चन्द्राकार स्थान है, जिससे सदैव अमृत प्रवाहित होता है। यही स्थान कबीर ने चन्द के नाम से पुकारा है।

१३—चरखा

काल-चक्र, (देखिए पृष्ठ ४४)

१४—चोर (पंच)

पंच विकार

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद।

१५—जमुना

पिंगला नाड़ी का दूसरा नाम जमुना है। इसे असी भी कहते हैं। यह अज्ञा-चक्र के बाएँ ओर जाती है।

१६—जना (तीन)

तीन गुण—

सत, रज, तम

१७—तरुवर

मेरुदण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१८–त्रिकुटी

भोंहों के मध्य का स्थान

१९–दस ढाई

पच्चीस प्रकृतियाँ

२०–धनुष

(देखिए त्रिकुटी)

२१–नागिनी

मूलाधार-चक्र की योनि के मध्य में विद्युल्लता के आकार की सर्प की भाँति साढ़े तीन बार मुड़ी हुई कुंडलिनी है जो सुषुम्ना नाड़ी के मुख की ओर है। यह सृजात्मक शक्ति है और इसीके जागृत होने से योगी को सिद्धि प्राप्त होती है।

२२–पंच जना

अद्वैतवाद के अनुसार विश्व केवल एक तत्व में निहित है–उस तत्व का नाम है परब्रह्म। सृष्टि करने की दृष्टि से उसका दूसरा नाम है मूल प्रकृति। मूल प्रकृति का प्रथम रूप हुआ आकाश, जिसे अंग्रेज़ी में ईथर (ether) कहते हैं। आकाश (ईथर) की तरंगों से वायु प्रकट हुई। वायु के संघर्षण से तेज (पावक) उत्पन्न हुआ। तेज के संघर्षण से तरल पदार्थ (ज़ल) उत्पन्न हुआ जो अन्त में दृढ़ (पृथ्वी) हो जाता है। इस प्रकार मूल प्रकृति के क्रमशः पांच रूप हुए जो पंचतत्त्वों के नाम से कहलाते हैं :—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी।

ये पांचों तत्त्व क्रमशः फिर मूल प्रकृति में लीन हो सकते हैं। पृथ्वी जल में, जल तेज में, तेज वायु में और वायु फिर आकाश में लीन हो सकता है और फिर अनन्त सत्ता का एक प्रशान्त साम्राज्य हो सकता है। यही अद्वैतवाद का सार-भूत तत्त्व है। प्रत्येक तत्त्व की पांच प्रकृतियाँ भी हैं। इस प्रकार पांच तत्त्व की पच्चीस प्रकृतियाँ हो जाती हैं। वे क्रमशः इस प्रकार हैं :—

आकाश की प्रकृतियाँ—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, अंतःकरण।

वायु " " प्रान, अपान, समान, उदान, व्यान।

तेज " " आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।

जल " " शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध।

पृथ्वी " " हाथ, पैर, मुख, गुह्य, लिंग।

२३—पिंगला

मेरुदण्ड के दाहिने ओर की नाड़ी। इसका अन्त नाक के बाएँ ओर होता है।

२४—पवन

प्राणायाम द्वारा शरीर की परिष्कृत वायु।

२५—पनिहारी (पंच)

पांच गुण—शब्द, स्पर्श, रूप, रस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२६—बंकनालि

(नागिनी देखिए)

२७—महारस

(अमृत देखिए)

२८—मँदला

(अनाहद देखिये)

२९—षट्चक्र

सुषुम्ना नाड़ी की छः स्थितियाँ छः चक्रों के रूप में हैं। उन चक्रों के नाम हैं—

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और अज्ञा।

मूलाधार चक्र	गुह्य-स्थान के समीप
स्वाधिष्ठान चक्र	लिंग-स्थान के समीप
मणिपूर चक्र	नाभि-स्थान के समीप
अनाहत चक्र	हृदय-स्थान के समीप
विशुद्ध चक्र	कण्ठ-स्थान के समीप
अज्ञा चक्र	दोनों भौंहों के बीच (त्रिकुटी में)

प्रत्येक चक्र की सिद्धि योगी को दिव्य अनुभूति में सहायक होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३०—सुरति

स्मृति का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ 'अनुभव की हुई वस्तु का सद्बोध-(उस चीज़ को जगाने वाला कारण) सहकार से संस्कार के आधीन ज्ञान विशेष है।' श्री माधव प्रसाद का कथन है कि सुरति 'स्वरत' का रूप है जिसका तात्पर्य है अपने में लीन हो जाना। कुछ विद्वान इसे फ़ारसी के 'सूरत-इ-इलमिया' का रूप बतलाते हैं। कबीर के 'आदि-मंगल' में सुरति का अर्थ आदि ध्वनि से ही लिया जा सकता है जिससे शब्द उत्पन्न हुआ है और ब्रह्माओं की सृष्टि हुई :—

१ 'प्रथम सूर्ति समरथ कियो घट में सहज उचार'

२ तब समरथ के श्रवण ते मूल सुरति भै सार
शब्द कला ताते भई, पाँच ब्रह्म अनुहार

३१—सुन्न

ब्रह्मरंध्रका छिद्र जो (०) बिन्दु रूप होता है। इसी से कुंडलिनी का संयोग होता है। इसी स्थान पर ब्रह्म (आत्मा) का निवास है। योगी जन इसी रंध्र का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। इस छिद्र के छः दरवाज़े हैं, जिन्हें कुंडलिनी के अतिरिक्त कोई नहीं खोल सकता। प्राणायाम के द्वारा इसे बन्द करने का प्रयत्न योगी जन किया करते हैं। इससे हृदय की सभी क्रियाएँ स्थिर हो जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३२—सूर्य

मूलाधार चक्र में चार दलों के बीच में एक गोलाकार स्थान है जिससे सदैव विष का स्राव होता है। इसी स्थान-विशेष का नाम सूर्य है जिससे निकला हुआ विष पिंगला नाड़ी द्वारा प्रवाहित होकर नाक की दाहिनी ओर जाता है और मनुष्य को वृद्ध बनाता है।

३३—सुषुम्ना

ईड़ा और पिंगला नाड़ी के बीच में मेरुदण्ड के समानान्तर नाड़ी। उसकी छः स्थितियाँ है, जहाँ छः चक्र हैं।

३४—हंस

जीव जो नव द्वार के पिंजड़े में बन्द रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(आ) सूफ़ीमत

ज़ात ذات सिफ़त صفت

सूफ़ीमत के अनुसार अहद (परमात्मा) के दो रूप हैं। प्रथम है ज़ात, दूसरा सिफ़त। ज़ात तो 'जानने वाले' के अर्थ में और सिफ़त 'जाना हुआ' के अर्थ में व्यवहृत होता है। अतएव जानने वाला प्रथम तो अल्लाह है और जाना हुआ है दूसरा मुहम्मद। ज़ात और सिफ़त की शक्तियाँ ही अनन्त का निर्माण करती हैं। इन शक्तियों के नाम हैं नज़ूल और उरूज। नज़ूल का तात्पर्य है लय होने से और उरूज का तात्पर्य है उत्पन्न अथवा विकसित होने से। नज़ूल तो ज़ात से उत्पन्न होकर सिफ़त में अन्त पाती है और उरूज सिफ़त से उत्पन्न होकर ज़ात में अन्त पाती है। ज़ात निषेधात्मक है और सिफ़त गुणात्मक। ज़ात सिफ़त को उत्पन्न कर फिर अपने में लीन कर लेता है। मनुष्य की परिमित बुद्धि ज़ात को सिफ़त से भिन्न, और सिफ़त को ज़ात से स्वतंत्र मानती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हक़ حق

सभी धर्मों और विश्वासों का आधार एक सत्य है। उसे सूफ़ीमत में हक़ कहते हैं। उनके अनुसार यह सत्य दो वस्त्रों से आच्छादित है। सिर पर पगड़ी और शरीर पर अंगरखा। पगड़ी रहस्य से निर्मित है जिसका नाम है रहस्यवाद। अंगरखा सत्याचरण से निर्मित है जिसका नाम है धर्म। वह सत्य इन वस्त्रों से इसलिए ढक दिया है जिससे अज्ञानियों की आँखें उस पर न पड़ें या अज्ञानियों की आँखों में इतनी शक्ति ही नहीं है कि वे उस देदीप्यमान प्रकाश को देख सकें। सत्य का रूप एक ही है पर उसका विवेचन भिन्न भिन्न भाँति से किया गया है। इसीलिये तो संसार में अनेक धर्मों की उत्पत्ति हुई।

अहद احد

केवल एक शक्ति-ईश्वर

वहदत وحدت

एकान्त अस्तित्व

इश्क़ عشق

जब अहद अपनी वहदत का अनुभव करता है तो उसके प्यार करने की शक्ति उसे एक दूसरा रूप उत्पन्न करने के लिए वाध्य करती है। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार प्रथम स्थिति में अहद आशिक़ बनता है और उसका उत्पन्न हुआ दूसरा रूप माशूक़। उत्पन्न हुआ अल्लाह का दूसरा रूप प्रेम में इतनी उन्नति करता है कि वह तो आशिक़ बन जाता है और अल्लाह माशूक़। सूफ़ीमत में अल्लाह माशूक़ है और सूफ़ी आशिक़।

बक़ा بقا जीवन की पूर्णता ही को बक़ा कहते हैं। यह अल्लाह की वास्तविक स्थिति है। मृत्यु के पश्चात् प्रत्येक जीव को इस स्थिति में आना पड़ता है। जो लोग ईश्वर के प्रेम में अपने को भुला देते हैं वे जीवन में ही बक़ा की स्थिति में पहुँच जाते हैं।

शरियत شريعت
तरीक़त طريقت — सूफ़ीमत के अनुसार 'बक़ा के
हक़ीक़त حقيقت — लिए साधनाएँ
मारिफ़त معرفت

सितारा ستاره तारा
महताब مهتاب चन्द्र — अल्लाह के प्रादुर्भाव को
अफ़ताब آفتاب सूर्य — सात रूप
मदनियत مدنيت खनिज
६ नबातात نباتات वनस्पति
हैवानात حيوانات पशु
इन्सान انسان मानव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नासूत	ناسوت
मलकूत	ملکوت
जबरूत	جبروت
लाहूत	لاهوت
हाहूत	هاهوت

मनुष्य अपने ही ज्ञान से ईश्वर की प्राप्ति करने के लिए विकास की इन पांच स्थितियों से होकर जाता है। प्रत्येक स्थिति उसे आगे की दूसरी स्थिति के योग्य बना देती है। इस प्रकार मनुष्य मानवीय जीवन के निम्नलिखित पांच आसनों पर क्रमशः आसीन होता जाता है—प्रत्येक का स्वभाव भी अलग अलग होता है।

आदम	آدم	साधारण मनुष्य
इन्सान	انسان	ज्ञानी
वली	ولی	पवित्र मनुष्य
कुतुब	قطب	महात्मा
नबी	نبی	रसूल

इनके क्रमशः पांच गुण हैं

अम्मारा	امارہ	इन्द्रियों के वश में
लौवामा	لوامہ	प्रायश्चित करने वाला
मुतमेन्ना	مطمئنہ	कार्य के प्रथम विचार करने वाला
आलिम	عالم	जो मन, क्रम, वचन से सत्य है
सालिम	سالم	जो दूसरों के लिए अपने को समर्पित करता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तत्व

नूर	نور	आकाश
वाद	باد	वायु
आतिश	آتش	तेज
आब	آب	जल
ख़ाक	خاک	पृथ्वी

इन तत्वों के अनुसार पांच इन्द्रियाँ भी हैं

१	बसारत	بصارت	देखने की शक्ति	आँख
२	समाअत	سماعت	सुनने की शक्ति	कान
३	नगहत	نگہت	सूंघने की शक्ति	नाक
४	लज्जत	لزت	स्वाद लेने की शक्ति	जीभ
५	मुस	مس	स्पर्श करने की शक्ति	त्वचा

इन्हीं इन्द्रियों के द्वारा रूह मुरशिद की सहायता से वक़ा के लिए अग्रसर होती है।

मुरशिद مرشد आध्यात्मिक गुरु या पद प्रदर्शक

मुरीद مرید वह व्यक्ति जो सांसारिक बन्धनों से रहित है बड़ा अध्यवसायी है और श्रद्धा पूर्वक अपने मुरशिद के आधीन है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दर्शन और स्वप्न

ख़याली خیالے जीवन के विचारों का प्रतिरूप
क़लबी قلبے जीवन के विचारों के बिपरीत
नक़्शी نقشے किसी रूपक द्वारा सत्य का निर्देश
रूही روحے सत्य का स्पष्ट प्रदर्शन
इलहामी الہامے पत्र अथवा वाणी के रूप में ईश्वरीय सन्देश का स्पष्टीकरण

ग़िजाई रूह غزائے روح भोजन (संगीत) के सहारे ही आत्मा परमात्मा के मिलन पथ पर आती है संगीत में एक प्रकार का कम्पन होता है जिससे आध्यात्मिक जीवन के कम्पन की सृष्टि होती है।

संगीत के पांच रूप हैं :—

तरब طرب शरीर को सञ्चालित करनेवाला (कलात्मक)

राग راگ मस्तिष्क को प्रसन्न करनेवाला (विज्ञानात्मक)

कौल قول भावनाओं को उत्पन्न करनेवाला (भावनात्मक)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निदा ندا दर्शन अथवा स्वरूप में सुन पड़ने वाला
(अनुभवात्मक)
सऊत صوت अनन्त में सुन पड़नेवाला
(आध्यात्मिक)

वजद وجد (Ecstasy) आनन्द
निमाज़ نماز इन्द्रियों को वश में करने के लिए साधन
वज़ीफ़ा وظیفہ विचारों " " "

ध्यानावस्थित होने के पांच प्रकार

ज़िकर ذکر शारीरिक शुद्धि के लिए
फ़िकर فکر मानसिक शुद्धि के लिए
कसब کسب आत्मा को समझने के लिए
शग़ल شغل परमात्मा में लीन होने के लिए
अमल عمل अपनी सत्ता का नाश कर परमात्मा की सत्ता प्राप्त करने के लिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हंस कूप तीर्थ

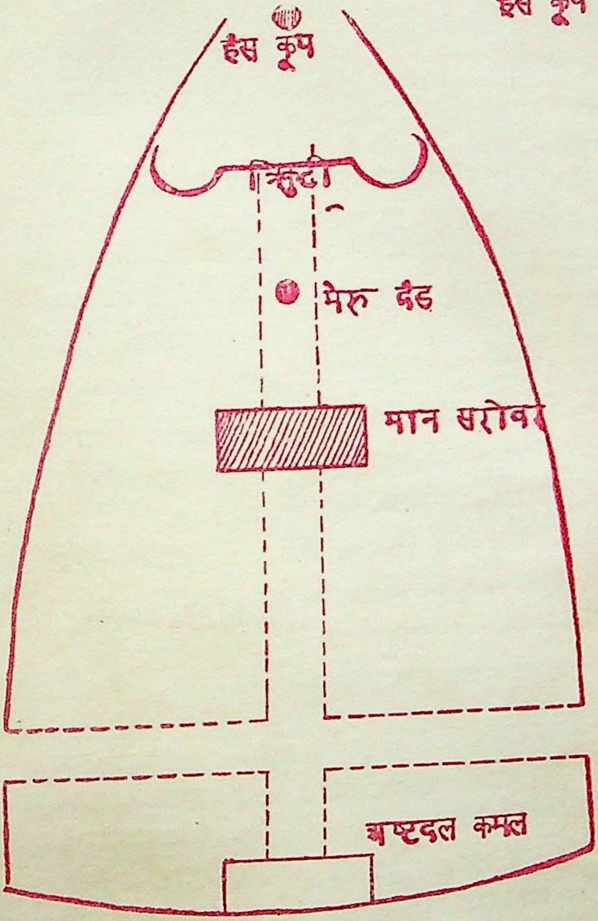

चित्र ३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग

हंसकूप

लगभग ८० वर्ष हुए विहार के स्वामी आत्माहंस ने इस हंसतीर्थ की स्थापना की थी। यह बी-एन डब्लू रेलवे झूंसी में पूर्व की ओर है। इस तीर्थ का रूप एक विकसित कमल के रूप में है। इसमें ईड़ा पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का दिग्दर्शन भलीभाँति कराया गया है। बाईं ओर यमुना के रूप में ईड़ा है और दाहिनी ओर गंगा के रूप में पिंगला। सुषुम्ना का विकास इस स्थान के उत्तरीय कोण में एक कूप में से हुआ है। स्थान के मध्य में एक खम्भा है जो मेरुदण्ड का रूप है। उस पर सर्पिणी के समान कुंडलिनी लिपटी हुई है। मेरुदण्ड से आगे एक मन्दिर है जिस पर त्रिकुटी लिखा हुआ है। त्रिकुटी के दोनों ओर आँख के आकार के दो ऊँचे स्थल हैं। त्रिकुटी की विरुद्ध दिशा में एक मन्दिर है जिसमें अष्टदल कमल की मूर्ति है। कुण्डलिनी मेरुदण्ड का सहारा लेकर अन्य चक्रों को पार करती हुई इस अष्टदल कमल में प्रवेश करती है। यह स्थान बहुत रमणीक है। कबीर के हठयोग को समझने के लिए यह तीर्थ अवश्य देखना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहायक पुस्तकों की सूची

अंग्रेज़ी

१. मिस्टिसिज्म
लेखक—इवलिन अन्डर हिल

२. दि ग्रेसेज अव् इन्टीरियर प्रेयर
लेखक—आर० पी० पूलेन
अनुवादक—लियोनोरा, एल० यार्कस्मिथ

३. स्टडीज़ इन मिस्टिसिज्म
लेखक—आर्थर इडवर्ड वेट

४. पर्सनल आइडियलिज्म एन्ड मिस्टिसिज्म
लेखक—विलियम राल्फ़ इन्ज

५. मिस्टिसिज्म इन हीथेनडम् एन्ड क्रिश्चियनडम्
लेखक—डाक्टर ई० स्लेमन
अनुवादक—जी० एम० जी० हन्ट

६. मिस्टिकल एलीमेन्ट इन मोहमेद
लेखक—जान क्लार्क आर्चर

७. दि योग फ़िलासफ़ी
संग्रहकर्ता—भागु० एफ० करभारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८. दि आइडिया अव् परसोनालिटी इन सूफ़ीज्म
लेखक—रेनाल्ड ए० निकलसन

९. दि मिस्टिसिज्म अव् साउंड
लेखक—इनायत ख़ां

१०. हिन्दू मेटाफ़िज़िक्स
लेखक—मन्मथनाथ शास्त्री

११. दि मिस्टीरियस कुंडलिनी
लेखक—बसन्त जी. रेले

१२. योग
लेखक—जे० एफ० सी० फुलर

१३. दि पर्शियन मिस्टिक्स (जामी)
लेखक—हेडलेन्ड डेविस

१४. दि पर्शियन मिस्टिक्स (रूमी)
लेखक—हेडजेन्ड डेविस

१५. सूफ़ी मैसेज
लेखक—इनायत ख़ां

१६. राजयोग
लेखक—मनिलाल नाभू भाई द्विवेदी

१७. कबीर एन्ड दि कबीर पन्थ
लेखक—वेस्‌कट

१८. दि आक्सफ़र्ड बुक अव् मिस्टिकल वर्स
निकलसन और ली (सम्पादक)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१९. बीजक

अहमदशाह

हिन्दी

१. बीजक श्रीकबीर साहब का

(जिसको श्री पूरणदास साहेब, बुरहानपुर नागझरी स्थानवाले ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा त्रिज्या की है)

२. कबीर ग्रन्थावली

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०

३. कबीर साहब का पूरा बीजक

पादरी अहमद शाह

४. संत बानी संग्रह भाग १—२

प्रकाशक—बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद

५. कबीर साहब की ग्यान गुदड़ी रेखते और झूलने

प्रकाशक—बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद

६. कबीर चरित्र बोध

युगलानन्द द्वारा संशोधित

७. योग दर्पण

लेखक—कन्नोमल एम० ए०

८. कबीर वचनावली

अयोध्यासिंह उपा...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़ारसी

१. मसनवी
   जलालुद्दीन रूमी

२. दीवानी शमसी तबरीज़

३. तज़किरातुल औलिया
   मुहम्मद अब्दुल अहद (सम्पादक)

४. दीवानी जामी

संस्कृत

१. योग दर्शन—पातञ्जलि

२. शिव संहिता
   अनुवादक—श्रीशचन्द्र वसु

३. घेरण्ड संहिता
   अनुवादक—श्रीशचन्द्र वसु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स

कबीर के पदों की अनुक्रमणी

अ

अकथ कहानी प्रेम की कछु कही न जाई ४५
अजहूं बीच कैसे दरसन तोरा ४३
अब न बसूं इहि गांइ गुसांई २४
अब मैं जाणि बौरे केवल राइ की कहानी ४१
अब मोंहि ले चल नणद के बीर अपने देसा १६
अवधू ऐसा ज्ञान विचारी ६
अवधू गगन मंडल घर कीजै २६
अवधू मन मेरा मतिवारा २५
अवधू सो जोगी गुरु मेरा ४२

आ

आऊंगा न जाऊंगा मरूंगा न जिऊंगा ४४

उ

उलटि जात कुल दोऊ बिसारी २१

क

कब देखूं मेरे राम सनेही ११
कियो सिंगार मिलन के तांई ८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई पीवै रे रस राम का, जो पीवै सो जोगी रे २७
को बीनै प्रेम लागो री, माई को बीनै १७

ग

गगन रसाल चुए मेरी भाठी २३

च

चलौ सखी जाइये तहां जहां गये पाइयें परमानन्द ३

ज

जनम मरन का भ्रम गया गोविंद लव लागी २२
जो चरखा जरि जाय बढ़ैया ना मरै १४
जंगल में का सोवना औघट है घाटा ३५

झ

झीनी झीनी बीनी चदरिया ६४

त

तोको पीव मिलेंगे घूंघट के पट खोल ६०
तोरी गठरी में लागे चोर बटोहिया का रे सोवै ५५

द

दुलहिनी गावहु मंगलचार ६
दूभर पनियां भरया न जाई २८
देखि देखि जिय अचरज होई ३६

न

नैहर मैं दाग लगाय आइ चुनरी ६१
नैहरवा हमका नहिं भावै ५८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ह

नामाद्यनुक्रमणी

अच्छर	५८,५६
अद्वैतवाद	२८,२६,३३
अनलहक़	३१
अनन्त संयोग	१३२
अनाहत	१११
अन्डरहिल (इवलिन)	११,५४,७५,७७
अन्तर्जगत	४८
अपरिग्रह	१००
अपान	१०६
अबुल अल्लाह	५०
अल हल्लाज मंसूर	२४,५२
अलमबुश	१०१
असी	११४
अस्तेय	१००
अहिंसा	६६
अज्ञाचक्र	११३
१०० आदि पुरुष	१८
आनन्द	
आध्यात्मिक	७५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शारीरिक	७५
आसन	६४,६७
ओंकार	५८
अंडज	६२
इच्छा	५८
इनायत ख़ाँ (प्रोफ़ेसर)	५०
इन्ज (विलियम राल्फ़)	१३६
इबलिस	८१
ईड़ा	१६,१०१,११४
ईश्वर	४
—प्राणिधान	६४
ईश्वरत्व	१२७
ईसप	४७
उग्रासन	६५
उदान	१०६
उद्भिज	६२
उपासना	६४
उमरा	१२७
उल्टबांसियाँ	४,१०,३६,
कबीर	१,४,५,६,७,१५,१७,६३,६५,७७,८१,९१ ११२,१२०,१२५,१४०
—पंथी	६३
कर्मयोग	६१ १०४
काबा	१२७
कालचक्र	४५,४६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुहू	१०१
कुंडलिनी	१०४,१०५,१०७,११५,११६
कुंभक	९६
कूर्म	१०९
कैथराइन	७८,७९
कोलरिज	१५
कुक्कुर	१०९
खुमार	३१,३२
गणेश	१०४
गधा	८५
गान्धारी	१०३
गुरु	४४,४९,८०,८९,९०
गूंगे का गुड़	३४
गोविन्द	८१
घेरण्ड संहिता	८९,९९,१०६,१०७
चन्द्र	११५
चरखा	४१,४२
जरसन	१३२
जान स्टुअर्ट ब्लैकी	२३
जामी	३१,५२
जार्ज हरबर्ट	१६
जेम्स (प्रोफ़ेसर)	११
टामसिन	१३९
डाक्टर फ्रूड	४६
डायोनिसियस	१३२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तक्षक सर्प	११५
तज़किरातुलऔलिया	२०
तपस्या	९४
तरीक़त	३०
ताना बाना	४१
त्रिकुटी	१०३,११३
दिरहम	१२८
देवदत्त	१०६
द्वैतवाद	८६
धनञ्जय	१०६
धारणा	९४,९८,१०१,११७
ध्यान	९४,९८,१०१,११७
नाग	१०६
निकलसन	१९,२४,३८
नियम	९४,९७,१००
निरंजन	५६,५९,६०
पतञ्जलि,	९३,९४,९५,९७,९८,९९
पद्मासन	९५
पवित्रता	९४
पिंगला	९६,१०१,११४
पिंडज	६२
पीर	८४
पूरक	१०१
पुष	९६
पैग़म्बर	८६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पंच प्राण	१०६
प्रत्याहार	६४,६६
प्राण	१०६
प्राणायाम	६५,१०१,१०६,११६
प्रेम	४८,४६,५०,५१,६४
प्लेटो	४७
फ़ना	३१
बक़ा	३१
बायज़ीद (शेख़)	१२७
बीजक	४२
ब्रह्म	४५
चक्र	१०३
चर्य	६४,१००
रंध्र	१०३,११४,११५,११६
ब्रह्मा	६०,६२
ब्लेक	४७
भक्तियोग	६१
मणिपूर चक्र	११०
महेश	६०,६२
माध्वाचार्य	८६
माया	४,२८,३३,५५,५६,६०,६१,६३
मारिफ़त	३१
मार्टिन (सेन्ट)	११
मुहम्मद अब्दुल अहद	२१
मूलाधार चक्र	१०२,१०४,१०७,११४,११५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूसा ४०

मेक्थिल्ड ५५

मेरी (मारगेरेट) १३५

मेरुदण्ड १०२,१०४

मंत्र योग ६१

यम ६४

यशस्विनी १०१

योग ६१

रमैनी ४,३५,३६,५६,५७,६०,६२

रवीन्द्रनाथ १३३

रहस्यवाद

अभिव्यक्ति ३६

परिभाषा ६

परिस्थितियाँ १७

विशेषता ४८

रँहटा ४०

रागिनियाँ ६२

राजयोग ६१

राबेआ २०

रामानन्द ८,८१,६१

रूपक ३६,५४

भाषा ४०

रूमी (जलालुद्दीन) १७,३१,३२,८३,१२१,१२४

रेचक ६६

रोलिन १३५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लब्बयक	३८
लियांनाहं	१३८
ली	२४
लोव् अव् इन्टलिजैन्स	१०३
वरणा	११४
वहिर्जगत	४८
वायु	८६
वाराणसी	११४
विरहिणी	६६,६७
विशुद्ध चक्र	११२
विश्वनाथ	११४
विष्णु	६०,६२
वेट	१३२
व्यान	१०६
शब्द,	३,३६,५६,५७,११६,११७
शम्सी तबरीज़,	१२,६४
शरियत	३०
शिवसंहिता,	९५,९६,१०२-१०६
	१०८—११०,११२—११५
शून्य	५८
शेख तक़ी	८
शंखिनी	१०१
श्रुति	५८
सत्पुरुष	२,३४,३५,३६,५८,५९,६२,६३
सत्य	६४,१००

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समधी	४२
समाधि	६४,६८,१०१,११७
सर्वनाम (मध्यमपुरुष)	३८
सहज	५८
सहस्रदल कमल	१०४,११४,११५
साबोमन	४७
सिद्धासन	६५
सुन्न	१०६,११७
सुषुम्ना	१०१,१०३,१०४,११४,११५
सूफ़	३०
सूफ़ी	३०
—मत	१६,२८,२८,३०,३१,६४,६५,१२०
—मत और कबीर	१७
सेन्ट आगस्टाइन	५८,११६
सोहं	६४
संतोष	६६
संयम	६२
स्वर	६४
स्वतिकासन	१०६
स्वाधिष्ठान चक्र	६४
स्वाध्याय	६२
स्वदेज	३०
हक़ीक़त	१२७
हज्ज	६१
हठयोग	

SPS 294.5 R 16 K 10018

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरि	३६,३७
हस्तजिह्वा	१०१
हाल	५४
हिन्दुस्थान	१२७
हुसामुद्दीन	८४
होमर	४७
ज्ञान	४८,४९

समाप्त

Sri Pratap Singh
Public Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE